ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 4, July - August 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

श्री राम: भारतीय संस्कृति

Dr. Anchal Meena

Associate Professor, Department of Political Science, Govt. College, Rajgarh, Alwar, Rajasthan, India

सार: भगवान श्री राम को भारतीय संस्कृति में आदर्श पुरुष के रूप में देखा जाता है। उन्हें धर्म, नैतिकता, ईमानदारी, और मानवीय गुणों का प्रतीक माना जाता है। श्री राम के चरित्र में सदाचार, कदर भवन, न्याय, और सहानुभूति की भावना समाहित है।

I. परिचय

सत्य, शिव और सुन्दर भारतीय संस्कृति के मूल तत्व हैं। भारतीय राष्ट्र का उद्भव सांस्कृतिक भाव भूमि में ही हुआ था। प्रकृति के प्रति आत्मीय भाव इस संस्कृति की विशेषता है। भारतीय संस्कृति उदात्त है। इस विशाल देश में यहां अनेक भाषाएं और अनेक बोलियां हैं। अनेक भाषाओं और बोलियों के बावजूद यहां सांस्कृतिक एकता है। सभ्यता राष्ट्र की देह है। संस्कृति प्राण है। यह कला, गीत, संगीत, स्थापत्य आदि अनेक रूपों में व्यक्त होती है। सबसे खास बात है भारतीय संस्कृति में विश्व एक परिवार है। 'वसुधैव कुटुंबकम' के सूत्र में समूचा विश्व परिवार जाना गया है।

स्वाधीनता संग्राम सांस्कृतिक नवजागरण था। यूरोप के पुनर्जागरण से भिन्न था। ऋग्वेद में सभी दिशाओं से ज्ञान प्राप्ति की स्तुति है। काव्य साहित्य और स्थापत्य संस्कृति की अभिव्यक्ति रहे हैं। सभी भारतीय भाषाओं में राष्ट्र का सांस्कृतिक प्रवाह प्रकट होता रहा है। संस्कृति का पोषण और संवर्द्धन प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। राष्ट्र राज्य का भी कर्तव्य है। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक संस्कृति और एक राष्ट्र की अवधारणा बिसरा दी गई। भारत की संस्कृति को कई संस्कृतियों का घालमेल बताया गया। इसे कम्पोजिट कल्चर कहा गया यहां अनेक बोलियां अनेक रीति रिवाज हैं। यहां विविधता है लेकिन विविधता के बावजूद सांस्कृतिक एकता भी है। यह बात डॉ. आंबेडकर ने 'पाकिस्तान आर पार्टीशन ऑफ इंडिया' में लिखी है। उन्होंने लिखा है कि यह बात सही है कि भारतवासी आपस में लड़ते झगड़ते हैं। लेकिन एक संस्कृति सबको जोड़े रखती है।[1,2,3]

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में संस्कृति संवर्द्धन पर उल्लेखनीय काम हुआ है। संस्कृति और धरोहरों का संरक्षण इन 9 वर्षों में एक विशेष एजेंडा रहा है। सांस्कृतिक धरोहरों की प्रतिष्ठा बढ़ी है। संस्कृति के प्रतीक वाले स्थानों, खूबसूरत मंदिरों के पुनर्निर्माण का काम हुआ है। श्रीराम भारत के मन के महानायक हैं। सारी दुनिया में उनकी कीर्ति है। राजनीति का एक बड़ा भाग श्रीराम को इतिहास पुरुष नहीं मानता। श्रीराम काल्पनिक चरित्र बताए जाते रहे हैं। केंद्र की सरकार ने राम वन गमन नाम की परियोजना शुरू की थी। यह मोदी जी की महत्वाकांक्षी परियोजना है। इस परियोजना ने दुनिया के तमाम देशों को आकर्षित किया है। इस परियोजना में 9 राज्यों में फैले 15 केंद्रों का पुनर्निर्माण/निर्माण सम्मिलित है। श्रीराम इन्हीं 9 राज्यों से होकर निकले थे। ऐसे स्थलों को पर्यटन के दृष्टिकोण से विकसित करना लक्ष्य रहा है। केंद्र सरकार के साथ सम्बंधित 9 राज्यों की सरकारें इस योजना पर काम कर रही हैं। राम भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रतीक हैं। श्रीराम के नाम से भारत की विशेष पहचान है।

काशी को भारतीय संस्कृति की राजधानी कहा जाता है। अब वाराणसी आकर्षक नगर है। 2019 में प्रधानमंत्री की अपेक्षानुसार विश्वनाथ कॉरिडोर पर काम शुरू हुआ। मंदिर परिसर के जीर्णोद्धार का काम भी साथ साथ चला। विश्वनाथ कॉरिडोर देश का दूसरा सबसे बड़ा कॉरिडोर है। 13 दिसंबर 2021 को प्रधानमंत्री मोदी जी ने इसका उद्घाटन किया था। इस कॉरिडोर की चर्चा यत्र तत्र सर्वत्र होती है। मध्य प्रदेश का उज्जैन सांस्कृतिक महत्त्व का महत्वपूर्ण केंद्र है। यहां महाकाल के दर्शनार्थ लाखों श्रद्धालु प्रतिवर्ष आते हैं। कालिदास की प्रतिष्ठित रचना 'मेघदूत' में महाकाल की प्रीतिकर उपस्थिति है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में महाकाल कॉरिडोर का निर्माण हुआ। इसकी भव्यता और सुंदरता आकर्षक है। अक्टूबर 2022 को उज्जैन में प्रधानमंत्री जी ने ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर मंदिर के विस्तृत क्षेत्र 'महाकाल लोक' का लोकार्पण किया था। यह भारतीय संस्कृति और परंपरा का तीर्थ है।

उत्तर प्रदेश के अयोध्या में श्रीराम के जन्म स्थान में भव्य मंदिर की अभिलाषा सपना रही है। जन्म भूमि को लेकर अनेक आंदोलन हुए। 2019 में श्रीराम जन्म भूमि सम्बंधी सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय आया। मोदी जी ने स्वयं अगस्त 2020 में इसकी आधारशिला रखी। अयोध्या पहले से ही भारतीय संस्कृति दर्शन और आस्तिकता का केंद्र रही है। केंद्र सरकार अयोध्या को उसकी प्रतिष्ठा के अनुसार एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल के रूप में विकसित कर रही है। यह काम इसी 9 वर्ष के दौरान शुरू हुआ। भव्य मंदिर का निर्माण जारी है। केंद्र और राज्य की सरकार बधाई की पात्र हैं। 2013 में केदारनाथ धाम के आस पास भीषण आपदा के कारण काफी क्षति हुई थी।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में इसकी भव्यता को फिर से संवारा गया। केदारनाथ मंदिर परिसर का उद्घाटन प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्वयं किया था। केदारनाथ धाम का विकास जारी है। संस्कृति प्रेमियों और भारतीय दर्शन के निष्ठावान लोगों के मध्य शंकराचार्य का नाम श्रद्धा और आदर के साथ लिया जाता है। वे अद्भुत विद्वान थे। भारतीय चिंतन में 6 प्राचीन दर्शन हैं। शंकराचार्य जी ने वेदांत दर्शन को विश्वव्यापी बनाया था। पं० दीन दयाल उपाध्याय ने शंकराचार्य पर एक पुस्तक भी लिखी थी। 25 नवंबर 2021 को उत्तराखंड के केदारनाथ धाम में शंकराचार्य की मूर्ति का अनावरण प्रधानमंत्री जी ने किया था। मोदी सरकार ने उत्तराखंड के लिए चार धाम परियोजना शुरू की है। यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम जोड़ने वाली चार लेन सड़क का निर्माण जारी है। जम्मू-कश्मीर के रघुनाथ मंदिर का भी पुनर्निर्माण किया गया। एक सरकारी अनुमान के अनुसार कश्मीर घाटी में लगभग 1842 आस्था केंद्र हैं। इनमें 952 मंदिर हैं। इनमें सिर्फ 212 में पूजा होती है। संविधान के अनुच्छेद 370 के हटने के बाद अनेक आस्था केंद्रों का पुनर्निर्माण हुआ है। लगभग 2300 वर्ष पुराने शारदा मंदिर की भी जीर्णोद्धार जारी है। कॉरिडोर का उद्घाटन गृहमंत्री अमित शाह ने किया था। खीरभवानी मंदिर का भी सौंदर्यकरण जारी है। फरवरी 2022 में हैदराबाद में ग्यारहवीं सदी के प्रख्यात संत व दार्शनिक रामानुजाचार्य के सम्मान में बनी 216 फिट ऊंची 'स्टेच्यू ऑफ इक्वैलिटी' का उद्घाटन प्रधानमंत्री मोदी जी ने किया था। इस परिसर में 25 करोड़ की लागत से म्यूजिकल फाउंटेन का निर्माण कराया गया था।

करतारपुर कॉरिडोर उपेक्षित रहा है। केंद्र सरकार ने यहां कॉरिडोर बनाए। उस स्थान तक पहुंचने के लिए मार्ग भी बनाया गया। गुरु गोविन्द सिंह के पुत्रों के शहादत दिवस को मोदी सरकार ने 'वीर बाल दिवस' घोषित किया। अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद मोदी जी के प्रयास से गुरु ग्रंथ साहिब की तीन प्रतियों की पवित्रता बनाए रखते हुए भारतीय वायु सेना के विमान से सुरक्षित रूप में भारत लाया गया। 9 वर्ष में दुनिया के दुसरे देशों में भी मंदिरों व सांस्कृतिक केंद्रों को भव्य बनाने का काम भी हुआ है।

2018 में प्रधानमंत्री ने अबुधाबी में बनने वाले पहले हिन्दू मंदिर की आधारशिला रखी। उन्होंने 2019 में बहरीन की राजधानी अबुधाबी में श्रीकृष्ण श्रीनाथ के पुनर्निर्माण के लिए 4.2 मिलियन डॉलर देने की घोषणा की। अमरनाथ और कैलाश मानसरोवर की यात्रा सुगम बनाई गई। 9 वर्ष में भारतीय संस्कृति के संवर्द्धन के लिए ऐतिहासिक कार्य हुए हैं। सेकुलरवाद के बहाने संस्कृति और हिन्दुत्व को सांप्रदायिक बताने की लत पृष्ठभूमि में है। विपक्षी दलों के नेता भी सांस्कृतिक प्रतीकों के प्रति निष्ठा व्यक्त कर रहे हैं।

II. विचार-विमर्श

भगवान राम भारत के प्राण है, राम का चरित्र भारतीय संस्कृति की आत्मा है। बिना राम के चरित्र के भारत निष्प्राण है। भारतीय जनमानस के रोम- रोम में राम बसे हुए हैं[4,5,6]। संसार सागर से पार उतरने का प्रमुख साधन राम नाम ही है।

यह बात विराट हिन्दू उत्सव समिति संस्थापक कैलाश मंथन ने राम जन्मोत्सव पर कही। भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव पर विराट हिन्दू उत्सव समिति, अंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय परिषद के तहत अंचल में कार्यक्रम हुए। प्रमुख राम मंदिरों, धार्मिक केंद्रों सत्संग मंडलों में रामनवमी पर दोपहर 12 बजे महाआरती, संकीर्तन व बौद्धिक कार्यक्रम हुए। द्वारकाधीश मंदिर, श्रीनाथ जी मंदिर, सदर बाजार स्थित राम मंदिर, चिंतन हाउस में विशेष मनोरथ हुए। समिति संयोजक श्री मंथन ने कन्या भोज भी कराया। रामचरित मानस व गीताजी की नि:शुल्क प्रतियां वितरण की गई। बौद्धिक सत्संग सभा में विराट हिउस प्रमुख श्री मंथन ने कहा कि हिन्दू संस्कृति में अंत समय राम नाम स्मरण से मुक्ति की प्राप्ति होती है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति का इतिहास गवाह है जिसने भी राम का सतत स्मरण किया उसी की पूजा हुई। बजरंगबली ने राम नाम के बल पर परम पद पाया। वर्तमान में महात्मा गांधी ने भी अंत में राम के उच्चारण से ही राष्ट्रपिता का परम पद प्राप्त किया। सुप्रीम कोर्ट, संसद भवन से लेकर राष्ट्रपति भवन में भी परम रामभक्त महात्मा गांधी के चित्र के ही दर्शन होते हैं। हिउस प्रमुख ने शहर में निकलते वाली शोभायात्राओं का स्वागत किया। डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में राम नाम अवलंबन एक विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि एवं प्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने कहाकि भारतीय संस्कृति में भगवान श्रीराम का महत्व सदियों से सदैव विद्यमान है। भगवान राम भारतीय संस्कृति की चेतना के प्राण तत्व हैं। राम नाम का आधार ही मानवता का उद्धार कर सकता है। प्रभु को धर्म, जाति देश और काल तक सीमित नहीं किया जा सकता।

भारतीय संस्कृति की चेतना के प्राण हैं राम : राज्यपाल
प्रभु श्री राम भारतीय संस्कृति की चेतना के प्राण तत्व है। संपूर्ण भारतीय संस्कृति में राम नाम की महत्ता की चर्चा पाई जाती है। भगवान श्री राम साधन नहीं साध्य हैं।

भारतीय संस्कृति की चेतना के प्राण हैं राम : राज्यपाल
अयोध्या: डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में राम नाम अवलंबन एक विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि एवं प्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने कहाकि भारतीय संस्कृति में भगवान श्रीराम का महत्व सदियों से सदैव विद्यमान है। भगवान राम भारतीय संस्कृति की चेतना के प्राण तत्व हैं। राम नाम का आधार ही मानवता का उद्धार कर सकता है। प्रभु को धर्म, जाति देश और काल तक सीमित नहीं किया जा सकता।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

विशिष्ट अतिथि जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य ने कहाकि अयोध्या दुनिया की पवित्रतम भूमि में है। जहां किसी का वध अकारण नहीं हो वह अयोध्या है। जब-जब किसी के जीवन व राष्ट्र में कठिनाई आई है तब तक राम ने ही मार्ग दिखाया है। राम नाम दुनिया की महाऔषधि है। उन्होंने रा का अर्थ राष्ट्र और म का अर्थ मर्यादा से जोड़कर राम के जीवन मूल्यों को स्पष्ट किया है। कुलपति प्रो. मनोज दीक्षित ने कहाकि जीवन की प्रत्येक समस्या के निवारण का रहस्य राम नाम में निहित है। कुलपति ने कहाकि राम ने पिता धर्म, पुत्र धर्म, पति धर्म, राज धर्म आदि को परिभाषित किया। मुख्य वक्ता भारतीय शिक्षण मंडल के महामंत्री उमाशंकर पचौरी ने कहा कि राम नाम ब्रह्म सुख की अनुभूति कराने वाला है। उन्होंने कहाकि राम नाम की भक्ति के बिना जीवन अधूरा है। नवाचार प्रकोष्ठ नई दिल्ली के निदेशक डॉ. मोहित गंभीर ने राम के जीवन की प्रत्येक घटना को मानव जाति के लिए संदेश बताया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. रमापति मिश्र ने किया।

वस्तुतः श्रीराम भारतीय संस्कृति के आदर्श हैं। तथा भारतीय संस्कृति के सबसे उदात्त चरित्र हैं। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा भारत की अन्य विभिन्न भाषाओं में अनेक राम कथाएं हैं और उन कथाओं के अपने अलग-अलग राम हैं।

वास्तव में भारतीय संस्कृति के आदर्श पुरुषोत्तम श्रीराम ही हैं। जहां अन्य वैदिक देवगण परिस्थितिवश कई अवसरों पर मर्यादा का उल्लंघन करते दिखाई दिखाई देते हैं, वहीं राम हर परिस्थिति में मर्यादा के साथ खड़े रहते हैं। भारतीय संस्कृति जिन मूल्यों के लिए जानी जाती है, वे सभी सांस्कृतिक मूल्य श्रीराम के व्यक्तित्व में समाहित हैं।

III. परिणाम

मेरे राम: हर भाषा की रामकथाएं, सबके अपने राम, भारतीय संस्कृति के पुरुषोत्तम हैं राम
वस्तुतः श्रीराम भारतीय संस्कृति के आदर्श हैं। तथा भारतीय संस्कृति के सबसे उदात्त चरित्र हैं। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा भारत की अन्य विभिन्न भाषाओं में अनेक राम कथाएं हैं और उन कथाओं के अपने अलग-अलग राम हैं।

वास्तव में भारतीय संस्कृति के आदर्श पुरुषोत्तम श्रीराम ही हैं। जहां अन्य [7,8,9]वैदिक देवगण परिस्थितिवश कई अवसरों पर मर्यादा का उल्लंघन करते दिखाई दिखाई देते हैं, वहीं राम हर परिस्थिति में मर्यादा के साथ खड़े रहते हैं। भारतीय संस्कृति जिन मूल्यों के लिए जानी जाती है, वे सभी सांस्कृतिक मूल्य श्रीराम के व्यक्तित्व में समाहित हैं।

वे वैभव की जगह वैराग्य को वरीयता देते हैं, साधन की जगह साधना को महत्त्व देते हैं और ग्रहण की जगह त्याग का चयन करते हैं। परिग्रह के विपरीत अपरिग्रह के साथ खड़े होते हैं। सिंहासन को तिनके की तरह छोड़ देते हैं, वन-वन भटकते हैं, निषादराज को गले लगाते हैं, शबरी के जूठे बेर खाते हैं। यद्यपि उनके ऊपर अग्निपरीक्षा तथा सीता परित्याग जैसे प्रश्नचिह्न भी खड़े हैं।

वस्तुतः श्रीराम भारतीय संस्कृति के आदर्श हैं। तथा भारतीय संस्कृति के सबसे उदात्त चरित्र हैं। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा भारत की अन्य विभिन्न भाषाओं में अनेक राम कथाएं हैं और उन कथाओं के अपने अलग-अलग राम हैं। सबने अपने-अपने राम के अलग-अलग चित्र बनाए हैं। लेकिन, सबमें एक समरूपता है राम की उदात्त चेतना। सद्गुणों को धारण करने वाले वाले व्यक्ति का नाम जब वाल्मीकि पूछते हैं तब नारद उस व्यक्ति का खुलासा करते हुए ईक्ष्वाकुवंशी श्रीराम का नाम लेते हैं और यह भी बताते हैं कि यह नाम जन जन में व्याप्त है।

मैं समझता हूं कि राम ऐतिहासिक पात्र हों अथवा काल्पनिक चरित्र, वह हमारी संस्कृति के प्रतीक पुरुष अवश्य हैं। हमारे जीवन का

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

आदर्श हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। प्रत्येक संस्कृति के लिए ऐसे आदर्श चरित्र होने ही चाहिए। ऐसे सांस्कृतिक प्रतीकों को देखकर ही मनुष्य अपनी लघुताओं को समझ सकता है तथा अपने को संवार सकता है। इसीलिए राम आज हमारे लिए जीवन सत्य हैं, मनुष्यता के लिए आवश्यक आदर्श हैं तथा सर्वोच्च सांस्कृतिक प्रतीक हैं। इन दिनों राम नाम से जिस आध्यात्मिक चेतना का संचार हो रहा है वो शायद इस आधुनिक पीढ़ी के लिए नया हो। 'सिय राम मय सब जग जानी।' इन दिनों जग के जिस भी कोने में हिंदू रह रहे हैं, वहाँ इसका अहसास किया जा सकता है। चहुँओर सब राम मय है। हर तरफ़ राम राम है। भगवान श्री राम वैसे तो हमेशा कण कण में, जन जन में रहे हैं। अनंत काल तक रहेंगे। लेकिन क्षणिक सुखों के लिए अपने मूल्यों का पतन करने वाले क्या उनका व्यक्तित्व समझ पाएंगे ? उत्तर प्रदेश के बदायूं की लेखिका दीप्ति सक्सेना की कलम से :-

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम– हमारी सांस्कृतिक धरोहर
श्री राम सनातन धर्मावलंबियों के पूज्य अवतार ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति के आदर्शों के प्रणेता हैं। श्रीराम का संपूर्ण जीवन एक सर्वश्रेष्ठ पुरुष की मर्यादा के अनुपालन में व्यतीत हुआ, इस कारण उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। राजवंश में सर्व सुख भोगने के उपरान्त भी त्याग–तपस्या के जीवन को अंगीकार करना कोई साधारण बात नहीं है, वह भी सौतेली माता के स्वार्थ पूर्ति के लिए। स्व सुख की परिधि को तोड़कर यौवन के चौदह वर्ष वनवासी सदृश व्यतीत करना किसी मनुष्य की क्षमता से पूर्णरूपेण बाहर है।

श्री राम एक कांतिमान,विद्यावान, सत्यवादी, विवेकी, शिष्ट, कर्मठ, त्यागी, धैर्यवान, विनम्र, क्षमाशील, योगशक्ति से परिपूर्ण प्रभावशाली व्यक्तिव के स्वामी थे। इस प्रकार भगवान विष्णु के अनंत गुणों में से प्रधान बारह कलाओं (गुणों) को धारण करने के कारण ही वे उनके अवतार माने जाते हैं। यानी ईश्वरीय गुणों से युक्त मानव!!!

श्री राम का जीवन वृत्त हमारी संस्कृतिक धरोहर है। उनका चरित्र चित्रण हमारी विरासत है जो भावी पीढ़ियों के हितार्थ मनुष्यता के संरक्षण हेतु पथप्रदर्शन करती है। देश की उन्नति में उसकी सांस्कृतिक धरोहरों का बहुत बड़ा महत्त्व होता है। श्री राम ने ऐसे प्रतिमान गढ़ दिए हैं जिनका अनुपालन समाज को सही दिशा देता है। राजघरानों में बहुविवाह प्रथा होने पर भी सीता माँ को कभी दूसरा विवाह न करने का वचन देना, संपत्ति या राजसुख हेतु भाइयों के मध्य निर्विवाद स्थिति, माता–पिता–गुरु की आज्ञा को बिना तर्क–वितर्क के स्वीकार करना, उच्च–निम्न के भेद से ऊपर सभी से समभाव से व्यवहार करना, शत्रु के भी गुणों का सम्मान करना, राज्य में समता पूर्ण न्यायपूर्ण प्रणाली, राज्य और धर्म की रक्षा हेतु शस्त्र उठाना आदि कितने ही आदर्शों की स्थापना में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। गरिमापूर्ण जीवनयापन के लिए क्या त्याज्य है और क्या स्वीकार्य, श्री राम चरित्र हमें यही शिक्षा देता है।

विडंबना है कि आज आसुरी प्रवृत्तियों और भ्रष्ट संस्कृतियों के अवलंबियों द्वारा अनावश्यक रूप से श्री राम के अस्तित्व, व्यक्तित्व और कृतित्व पर कुठाराघात किया जाता है। किसी संस्कृति [10,11,12]को मिटाने के लिए उसकी सांस्कृतिक धरोहरों को मिटाना आवश्यक होता है, जिसके क्रम में कई मंदिरों, विश्वविद्यालयों को तोड़ा गया, पुस्तकों को नष्ट किया गया और महापुरुषों के चरित्र और विशिष्टता को षड्यंत्रों द्वारा खण्डित किया गया। हास्यास्पद यह है कि जिनके पास स्वयं अपनी मान्यताओं के प्रमाण नहीं है, वे श्री राम के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं।

विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के संपर्क में आने के कारण समाज में संस्कृति, मूल्य और परंपराओं की बहुत बड़ी हानि हुई है। जनमानस निकृष्ट कर्मों की ओर आकर्षित हो रहा फलतः अपराध बढ़ रहे हैं।आज जहाँ देखो वहाँ मनुष्य मर्यादा का उल्लंघन कर रहा है, जिसके परिणामस्वरूप आये दिन घटित भयावह कथाएँ विभिन्न माध्यमों से प्रकाशित–प्रसारित होती रहती हैं। क्षणिक सुखों के लिए मर्यादा को तार –तार करने वालों को अंत में पछतावे के अतिरिक्त कुछ प्राप्त भी नहीं हो रहा है, फिर भी एक अंधी दौड़ में सम्मिलित है।

भारतीय संस्कृति और समाज को अधोपतन से बचाने के लिए श्रीराम द्वारा स्थापित मानकों को अक्षुण्ण रखना अति आवश्यक हो गया है। सांस्कृतिक विरासत संरक्षित करने के लिए भारत में श्री राम पर शोध होने चाहिए। श्री राम ने एकता, धार्मिक समरसता और नैतिकता के आदर्शों को प्रतिष्ठित किया है। मानवजाति के लिए उनके क्रियाकलापों की प्रासंगिकता सार्वभौमिक सार्वकालिक है। रामायण उत्कृष्ट व्यवहार द्वारा जीवन यापन का संविधान है। मिथ्या कहानियों से विलग करते हुए श्री राम और रामायण को विश्व भर में यथासंभव प्रसारित– प्रचारित करना अपरिहार्य है, धर्म के प्रचार नहीं बल्कि मानवता के संरक्षण हेतु।

एक बहुत बड़ा विरोधाभास है कि यह देश, सदियों तक, एक ऐसे मनुष्य के नाम पर 2.77 एकड़ जमीन को लेकर खून बहाता रहा है, जो अपना राज्य त्यागने और हर उस चीज़ से दूर जाने के लिए तैयार था, जिसका वह न्यायपूर्ण उत्तराधिकारी था। और फिर भी, हम इस उपमहाद्वीप के करोड़ों लोगों के दिलों में उनके प्रति असाधारण भक्ति को कम करके नहीं आंक सकते।

सबसे पहले, मैं यह साफ कर दूं कि मैं खुद को हिंदू या मुस्लिम समुदाय का समर्थक नहीं मानता। एक योगी के रूप में, मैं अपनी पहचान किसी एक विश्वास के साथ नहीं जोड़ता। योग पहचानों को छोड़ने का विज्ञान हैं, न कि उन्हें इकट्ठा करने का। यह भी एक

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

सच्चाई है कि दक्षिण भारत में राम जन्मभूमि का प्रश्न कोई बड़ा भावनात्मक मुद्दा नहीं है। दक्षिण में राम के बहुत से भक्त हैं, मगर एक पवित्र स्थान के रूप में अयोध्या उनके लिए कोई विशेष महत्व नहीं रखती।

यह नहीं भूलना चाहिए कि दो समुदायों को बांटने की अंग्रेजी शासन की बेहतरीन कोशिशों के बावजूद, 1857 में हिंदुओं और मुसलमानों ने साथ मिलकर आजादी की पहली लड़ाई लड़ी थी। हमने उस षड्यंत्र का गुलाम बनने से इंकार कर दिया, जो हमें बांटते हुए हमें कमज़ोर करना चाहता था।

फिर भी, अगर मैं उच्चतम न्यायालय के निर्णय का स्वागत करूं, तो उसकी वजह ये होगी कि मैं इस देश के उन बहुत से लोगों में से हूं, जो चाहते हैं कि इस देश के विकास की राह में जो भी बाधाएं हैं, वे खत्म हो जाएं। मैं जानता हूं कि 95 प्रतिशत आबादी ऐसा ही महसूस करती है। हम सभी चाहते हैं कि लंबे समय से घिसटता चला आ रहा यह मुद्दा हमेशा के लिए सुलझ जाए। उच्चतम न्यायालय के निर्णय ने ऐसा ही किया है। यह एक ऐतिहासिक फैसला है, जिसका सभी को स्वागत करना चाहिए।

हमारी व्यक्तिगत धारणाएं जो भी हों, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि रामायण इस सभ्यता की मूलभूत कथाओं में से एक रही है। राम 7000 से अधिक सालों से लाखों जीवनों का आधार रहे हैं। इस बात पर गौर करना महत्वपूर्ण है कि वह कोई धार्मिक व्यक्तित्व नहीं हैं। कोई भी धर्म उन पर पूरी तरह दावा नहीं कर सकता। न ही इस कहानी में किसी भी बिंदु पर राम खुद को एक हिंदू घोषित करते हैं। अगर राम इस देश के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आदर्श हैं, तो इसलिए क्योंकि वह स्थिरता, संतुलन, शांति, सत्य, पवित्रता, करुणा और न्याय के प्रतीक हैं। हम उन्हें इसलिए पूजते हैं क्योंकि उनमें एक महान सभ्यता के निर्माण के लिए जरूरी गुण समाए हैं। अगर महात्मा गांधी ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान रामराज्य का रूपक गढ़ा, तो इसकी वजह ये थी कि यह महान पौराणिक कथा हमारे डीएनए का हिस्सा है, यह हमारे सामूहिक मानस की गहराई में स्थापित है। ऐसी कहानी को विकृत न करना बहुत जरूरी है।

IV. निष्कर्ष

हां, आधुनिक मन यह सोचकर हैरान हो सकता है कि हम राम की पूजा क्यों करते हैं। आखिरकार, उनकी कहानी कामयाबी की कहानी नहीं है। बल्कि उनके जीवन में लगातार विपत्तियां आती रहीं। कुछ ही लोग एक जीवनकाल में इतने दुर्भाग्यों से गुज़रते हैं। हालांकि वह सिंहासन के कानूनी उत्तराधिकारी हैं, वह अपना राज्य खो बैठते हैं और उन्हें वनवास दे दिया जाता है। वहां वह अपनी पत्नी खो देते हैं, जिन्हें वापस लाने के लिए उन्हें युद्ध लड़ना पड़ता है जिस प्रक्रिया में वह एक पूरा देश जला डालते हैं, और अपनी पत्नी को वापस लाते हैं। फिर उन्हें लोगों की आलोचना और छींटाकशी का शिकार बनना पड़ता है, जिसके बाद वह एक बार फिर अपनी पत्नी को जंगल भेज देते हैं। और भी दुर्भाग्य : उनकी प्रिय रानी को दुखद रूप से जंगल में बच्चों को जन्म देना पड़ता है। और विडंबना देखिए, राम अपने ही बच्चों से युद्ध करते हैं, क्योंकि वे उन्हें नहीं पहचानते। और अंत में, जिस एक स्त्री से उन्होंने हमेशा प्रेम किया, वह सीता जंगल में मृत्यु को प्राप्त होती हैं। साफ तौर पर यह एक शोकपूर्ण कहानी है और इस मनुष्य का जीवन एक बड़ी विफलता थी। लेकिन अगर हम उन्हें पूजते हैं, तो इसलिए क्योंकि उन्होंने अपना जीवन इस खास तरह से जिया, उन्होंने अपनी विफलताओं को भव्यता, गरिमा, साहस और धैर्य से संभाला।

उनका आदर इसलिए नहीं किया जाता कि वह बाहरी दुनिया के विजेता थे, वह भीतरी जीवन के विजेता हैं, क्योंकि वह विपरीत परिस्थितियों में डगमगाते नहीं हैं।
आज एक आधुनिक दृष्टि अपनाते हुए इस कहानी में दोष ढूंढना संभव है : हम सीता के प्रति राम के बर्ताव को स्त्री के प्रति अन्याय मान सकते हैं, या वानरों के चित्रण को नीचा दिखाने वाला और किसी खास जाति पर केंद्रित मान सकते हैं। दरअसल अतीत में जाकर किसी भी व्यक्तित्व को उठाकर उसकी चीर-फाड़ करना बहुत आसान है। चाहे वे कृष्ण हों, ईसामसीह या बुद्ध, एक आधुनिक दृष्टि से उनकी जांच-परख करना और उन्हें किसी न किसी रूप में अपूर्ण और दोषपूर्ण दिखाना आसान है। मगर इससे पहले कि हम आसानी से फैसले करते हुए इन व्यक्तित्वों को खारिज कर दें, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मानवता को आदर्शों की जरूरत है।

आइए देखते हैं कि कौन सी चीज़ राम को इतना असाधारण बनाती है। कई हज़ार साल पहले, जब दुनिया के अधिकांश हिस्सों में शासक सिर्फ विजेता थे, जो अक्सर बर्बर हुआ करते थे – उस समय राम ने [13,14,15]मानवता, त्याग और न्याय की अनुकरणीय भावना का प्रदर्शन किया। उनका आदर इसलिए नहीं किया जाता कि वह बाहरी दुनिया के विजेता थे, वह भीतरी जीवन के विजेता हैं, क्योंकि वह विपरीत परिस्थितियों में डगमगाते नहीं हैं। रावण को मारने के बाद भी उनकी आँखों में क्रोध नहीं दिखता, वह गिरे हुए रावण के शव के पास आते हैं और उन्हें जो कार्य करना पड़ा, उसके लिए पश्चाताप करते हैं। अपने जीवन की सारी चुनौतियों के बीच, वह कभी अपना संतुलन नहीं खोते, कभी मन में कड़वाहट या प्रतिशोध नहीं रखते। वह काफी हद तक छल-कपट या राजनीति से दूर रहते हैं और अपनी शक्ति के दुरुपयोग को लेकर बहुत सतर्क रहते हैं। समभाव रखने वाले राम समग्रता और आत्म-त्याग का

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

जीवन जीते हुए एक मिसाल पेश करते हैं, वे अपनी प्रजा के लिए अपनी खुशी त्यागने के लिए तैयार हैं। सबसे बढ़कर, मुक्ति को महत्व देने वाली संस्कृति में वह नकारात्मकता, स्वार्थ और अधमता से ऊपर उठकर आज़ादी के प्रतीक हैं।

संक्षेप में, राम नायक इसलिए नहीं हैं, क्योंकि उनका जीवन परफेक्ट है, बल्कि इसलिए हैं क्योंकि वह एक असाधारण जीवन जीते हैं। इसीलिए उन्हें मर्यादा पुरुष कहा जाता है। और यदि रामराज्य को एक आदर्श के रूप में रखा जाता है, तो इसलिए क्योंकि वह एक न्यायपूर्ण राज्य का प्रतीक है, तानाशाही का नहीं। आज हम भारत को वही बनाना चाहते हैं और इसीलिए रामायण आज भी लगातार प्रासंगिक बना हुआ है।

राम-भूमि के भावनात्मक मुद्दे को जमीनी विवाद के तौर पर नहीं देखा जा सकता। सोलोमन की विद्वता हमें बताती है कि यह कभी संतोषजनक नहीं होगा। जब दो स्त्रियां एक ही बच्चे पर दावा करते हुए सोलोमन के पास पहुंची थीं, तो उन्होंने बच्चे को दो हिस्सों में काटकर दोनों को एक-एक हिस्सा ले लेने को कहा था। असली माता ने तुरंत दूसरी स्त्री से कहा, 'तुम मेरे बेटे को ले लो। मैं अपने बच्चे के साथ ऐसा कभी नहीं कर सकती।' किसी चीज़ को बस टुकड़ों में बांट देने से कभी कोई समाधान नहीं निकला है। समाधान वह है, जो हर किसी के लिए सार्थक, सम्मानजनक और व्यावहारिक हो। उच्चतम न्यायालय के फैसले ने हमें वही दिया है। उसने निर्णायक रूप से, समतापूर्वक और सहानुभूतिपूर्वक एक ऐसे मुद्दे को हल किया है जो लंबे समय तक इस देश में विनाश का कारण बना है। दोनों समुदायों के जिम्मेदार लोगों ने इस समाधान का स्वागत किया है। अब आगे बढ़ने का समय है।

देश का एक खास वर्ग – जो शुक्र है, छोटा है – हर समाधान में समस्याएं खोजना चाहता है। मगर हम इस मानसिकता से ऊब चुके हैं। अब हर समस्या का समाधान खोजने का समय है। यह नहीं भूलना चाहिए कि दो समुदायों को बांटने की अंग्रेजी शासन की बेहतरीन कोशिशों के बावजूद, 1857 में हिंदुओं और मुसलमानों ने साथ मिलकर आजादी की पहली लड़ाई लड़ी थी। हमने उस षड्यंत्र का गुलाम बनने से इंकार कर दिया, जो हमें बांटते हुए हमें कमज़ोर करना चाहता था। हमने अपनी कहानी खुद लिखने का फैसला किया। आजादी की लड़ाई के दौरान, हम एक होकर एक ही लक्ष्य को सामने रखकर एक जन, एक राष्ट्र के रूप में आगे बढ़े। फिर से वैसा ही करने का समय आ गया है।[16,17,18]

ऐतिहासिक जख्मों को बार-बार कुरेदना, क्रोध और संघर्ष की गाथा को फिर से सामने लाना तथा हिंसा और प्रतिशोध की कहानियों को बार-बार खोलना बंद करना होगा। जो भी दर्द रह गया है, उसे ठीक होने दें। अब समय है कि हिंदू समुदाय दुख झेल रहे लोगों की ओर हाथ बढ़ाए और याद रखे कि जिस मनुष्य की विरासत को वे सुरक्षित करना चाहते हैं, वह किसी के प्रति कोई दुर्भावना या नाराज़गी नहीं रखता था। अब कृपा और आभार में झुकने और राम की विनम्रता को याद रखने का समय है। इस देश के मुस्लिम समुदाय के लिए भी यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि उन्हें जो शिक्षा मिली है, वह उन्हें बताती है कि सारी धरती इबादत की जगह है। इससे अधिक समावेशी कथन कोई नहीं हो सकता।

उच्चतम न्यायालय का निर्णय एक मील का पत्थर है। इसका मतलब है कि हम अपने झमेलों की जिम्मेदारी ले रहे हैं और अपनी अगली पीढ़ी को यह विरासत नहीं सौंपेंगे। इस देश की भावी पीढ़ियों के अपने मुद्दे होंगे, मगर कम से कम हम उनके ऊपर कोई पुरानी समस्या नहीं लाद रहे।[19]

राम इस देश के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आदर्श हैं, क्योंकि वह स्थिरता, संतुलन, शांति, सत्य, पवित्रता, करुणा और न्याय के प्रतीक हैं। हम उन्हें इसलिए पूजते हैं क्योंकि उनमें एक महान सभ्यता के निर्माण के लिए जरूरी गुण समाए हैं।[20]

संदर्भ

1. संस्कृत-हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे।
2. ↑ श्रीविष्णुसहस्रनाम, सानुवाद शांकर भाष्य सहित, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण-1999, पृष्ठ-143.
3. ↑ ऋग्वेद पदानां अकारादि वर्णक्रमानुक्रमणिका, संपादक- स्वामी विश्वेश्वरानन्द एवं स्वामी नित्यानन्द, निर्णय सागर प्रेस, मुंबई, संस्करण-1908, पृ०-348.
4. ↑ ऋग्वेदसंहिता (श्रीसायणाचार्यकृत भाष्य एवं भाष्यानुवाद सहित) भाग-5, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, संस्करण-2013, पृष्ठ-3892.
5. ↑ ऋग्वेदसंहिता (श्रीसायणाचार्यकृत भाष्य एवं भाष्यानुवाद सहित) भाग-5, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, संस्करण-2013, पृष्ठ-4406.
6. ↑ ऋग्वेद पदानां अकारादि वर्णक्रमानुक्रमणिका, संपादक- स्वामी विश्वेश्वरानंद एवं नित्यानंद, निर्णय सागर प्रेस, मुंबई, संस्करण-1908, पृ०-79.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

7. ↑ वैदिक-पदानुक्रम-कोषः, संहिता विभाग, तृतीय खण्ड, संपादक- विश्वबन्धु शास्त्री, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशिआरपुर, संस्करण-1956, पृष्ठ-1550; एवं ऋग्वेद पदानां अकारादि वर्णक्रमानुक्रमणिका, संपादक- स्वामी विश्वेश्वरानंद एवं नित्यानंद, निर्णय सागर प्रेस, मुंबई, संस्करण-1908, पृ०-195.
8. ↑ हिन्दी साहित्य कोश, भाग-2, संपादक- डॉ० धीरेंद्र वर्मा एवं अन्य, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण-2011, पृष्ठ-497.
9. ↑ [आ] वैदिक-पदानुक्रमकोषः, -आरण्यक विभाग, द्वितीय खण्ड, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, लवपुर, संस्करण-1936, पृष्ठ-852.
10. ↑ ऐतरेयब्राह्मणम् (सायण-भाष्य एवं हिन्दी अनुवाद सहित) भाग-2, संपादक एवं अनुवादक- डॉ॰ सुधाकर मालवीय, तारा प्रिंटिंग वर्क्स, वाराणसी, संस्करण-1983, पृष्ठ-1201.
11. ↑ (सटीक), भाग-1, विजयकुमार गोविंदराम हासानंद, दिल्ली, संस्करण-2010, पृष्ठ-657.
12. ↑ महाभारत, वनपर्व-११०-४१; गीताप्रेस, गोरखपुर, भाग-२, पृष्ठ-१२६३.
13. ↑ महाभारत, वनपर्व-११३-११; गीताप्रेस, गोरखपुर, भाग-२, पृष्ठ-१२७१.
14. ↑ श्रीरामचरितमानस, बालकांड-१९०-१.
15. ↑ Pattanaik, Devdutt (8 August 2020). "Was Ram born in Ayodhya". mumbaimirror.
16. ↑ श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (सटीक), प्रथम भाग, बालकाण्ड-18-8,9; गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण-1996 ई०, पृष्ठ-69.
17. ↑ श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, पूर्ववत्,1.15.29; पृ०-64.
18. ↑ A REALISTIC APPROACH TO THE VALMIKI RAMAYANA (Translation of the Original Book 'VASTAVA RAMAYANA' in Marathi), Dr. Padmakar Vishnu Vartak, English Translation by Vidyakar Vasudev Bhide, Blue Bird (India) Limited, Pune, First Edition-2008, p.282.
19. ↑ A REALISTIC APPROACH TO THE VALMIKI RAMAYANA, ibid, p.290-300.
20. ↑ A REALISTIC APPROACH TO THE VALMIKI RAMAYANA, ibid, p.300.

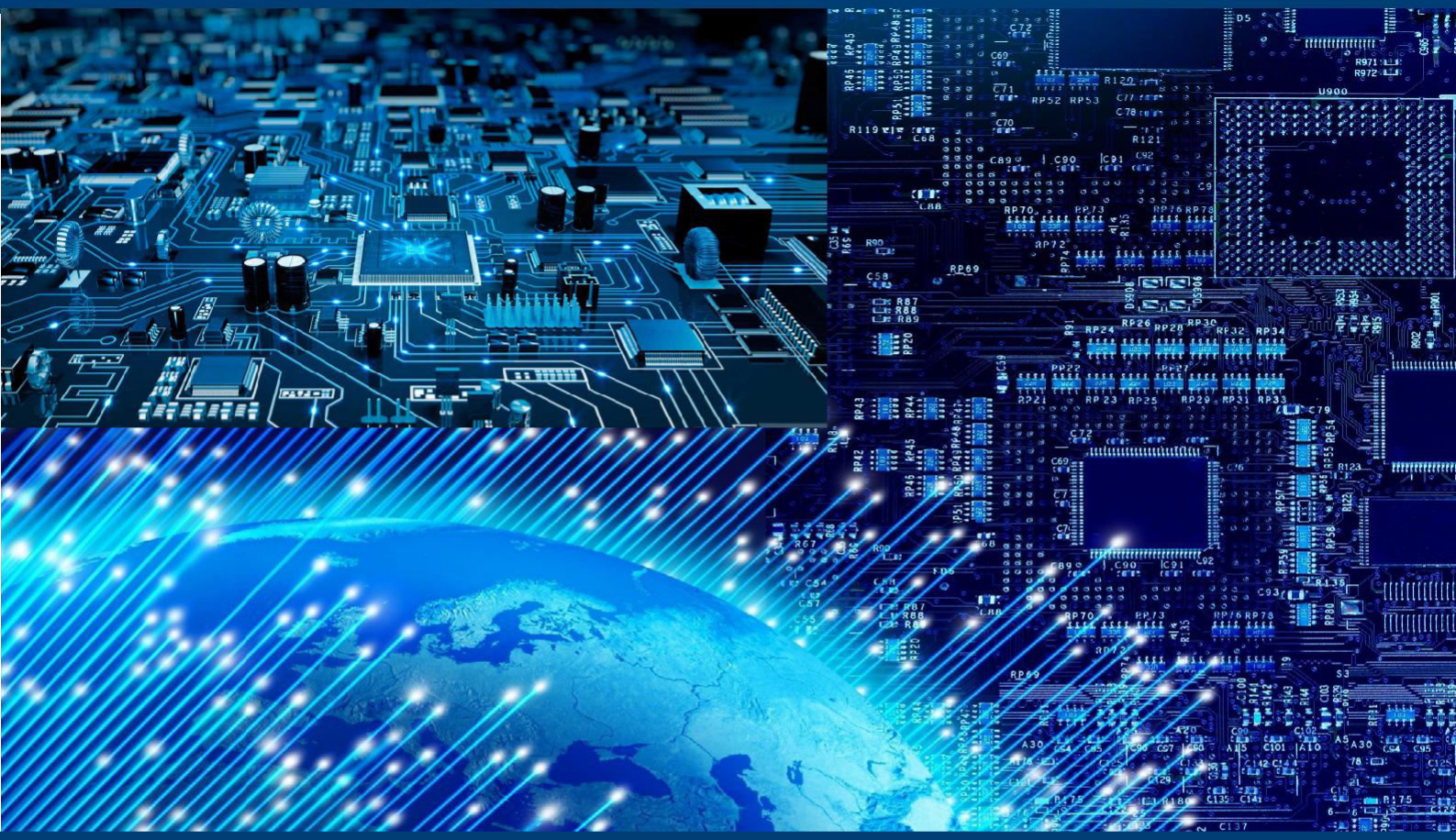

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |